ज़िम्मेदारियां ही ज़िम्मेदारियां

सुहास कुमार

"सीमा, मैं बाहर जा रही हूं, भैया का ख्याल रखना, किन्नी के बाल बांध देना।"

"सीमा, मैंने खाना बना दिया है। फुलके तुम बना लेना।"

"सीमा, भैया को चोट कैस लग गई। ज़रा देर ध्यान नहीं रख सकती।"

"सीमा, घर की सफाई मैं नहीं कर पाई, तुम्हीं कर देती।"

घर की बड़ी औरतों के यह बोल हैं जिन्हें सुनती हर लड़की बड़ी होती है।

"खाना बनाना सीख लो। सिलाई-कढ़ाई सीख लो। ज़ोर-ज़ोर से हंसना ठीक नहीं। लड़कों से बात करना ठीक नहीं।"

"यह लड़की तो पराए घर जाकर हमारी नाक कटाएगी।"

यह सारी बातें लड़की को ही संबोधित करके कही जाती हैं। इन सब के पीछे भावना यह होती है कि घर के कामों में मदद करना, छोटे भाई बहनों की देखभाल करना, घर बनाना, घर चलाना, घर की इज्जत बनाए रखना सब औरत की ही ज़िम्मेदारी है।

× × ×

लड़की ससुराल पहुंचती है। अपने घर जो मायके से भी ज्यादा पराया होता है।

"मेरे कपड़े धुल गए?"

"मेरी कमीज़ कहां गई? अरे इस पर इस्त्री भी नहीं की।"

"मां मेरा मुंह धुलवा दो।"

"ज़रा मेरे बाल बना दो।"

"बहू, मेरे सर में तेल लगा दो।"

"मां मेरी किताब कहां गई।"

"तुम देखती क्यों नहीं, बच्चे मेरा पेन क्यों उठा ले जाते हैं।"

"अरे अभी तक खाना ही तैयार नहीं हुआ। मेरे जूते भी पालिश नहीं हुए।"

"तुम सारे दिन करती क्या रहती हो।"

बहू बाहर काम करती है तो और मुश्किल। "बाहर काम करने का यह मतलब नहीं कि तुम घर की ज़िम्मेदारियां भूल जाओ।"

"मेहमानों को चाय बनाकर क्या मैं पिलाऊंगा?"

× × ×

घर का चूल्हा जलाए रखना, सबके भोजन-पानी का इंतजाम करना, घर की, कपड़ों की सफाई, किफायती ढंग से घर चलाना यानी दुगनी-चौगुनी मेहनत करना, घर में किसी भी सदस्य के बीमार पड़ने पर सेवा-देखभाल आदि करना, सबकी ज़िम्मेदारी औरत पर ही है।

कामकाजी महिलाओं की ज़िम्मेदारियां तो और भी बढ़ जाती हैं। घर की ज़िम्मेदारियों से छुटकारा तो दूर, उनका बंटवारा भी करने को पुरुष तैयार नहीं होते। अब जब बेटियां कई बार कमा कर लाने लगी हैं तो मां-बाप, भाई उनके ब्याह की ज़िम्मेदारी भी नहीं उठाना चाहते। बूढ़े मां-बाप की देखभाल करना तो क़ानूनन उनकी ज़िम्मेदारी बन चुकी है।

अब ज़रा दूसरे धरातल पर चलें। पति घर से विमुख है। घर की ओर ध्यान नहीं देता, शराब पीता है, जुआ खेलता है, वैश्यागामी है। वह मनोरंजन चाहता है तो पत्नी में ही कमी होगी! पति को घर से बांधकर रखने की ज़िम्मेदारी पत्नी के ही कंधों पर होती है। पत्नी को मारता-पीटता है तो भी पत्नी ही ज़िम्मेदार है।

लड़कियों या औरतों से छेड़छाड़ की जाती है, शीलभंग या बलात्कार होता है तो यह भी लड़कियों की ज़िम्मेदारी है। "तुम ही सज-धज कर निकली होगी।" "क्या ज़रूरत थी वहां अकेले जाने की।"

पुरुष नपुंसक है, पत्नी के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियां न निभाए, किसी कारण से बच्चे पैदा करने के नाकाबिल है, पत्नी को सब खामोशी से सहना पड़ता है। कितनी आसानी से पति इन सब दोषों के कारण पत्नी को छोड़ देते हैं, पत्नी नहीं छोड़ पाती।

घर में कलह होती है तो औरत ज़िम्मेदार है। बहू के घर से दहेज नहीं आया तो उस पर दबाव डालने, यहां तक कि जान लेने का भार औरत पर डाल दिया जाता है। परिवार नियोजन की सारी ज़िम्मेदारी उसके कंधों पर डाल दी जाती है। रीति-रिवाज़, परंपराएं, धर्म, संस्कृति सबको चलाए जाने की ज़िम्मेदारी औरत पर ही है।

इसका नतीजा

इतनी ज्यादा ज़िम्मेदारियों का बोझा स्त्रियों पर होने का नतीजा होता है अनेक शारीरिक व मानसिक अस्वस्थताएं। अभी हाल में हुए एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन से पता चला है कि भारतीय महिलाएं पुरुषों के मुकाबले में ज्यादा मन से जुड़ी बीमारियों का शिकार हैं। यह बात दूसरी है कि वे मनोवैज्ञानिक चिकित्सक तक न पहुंच सकें।

मन की उदासी (डिप्रेशन), उन्मत्तता आदि मानसिक समस्याओं का औरतें भारी संख्या में शिकार होती हैं। इससे उनकी उत्पादकता पर भी असर पड़ता है।

अध्ययनों से यह भी उभरकर आया है कि कामकाजी महिलाएं घर में 3 घंटे काम करती हैं तो पुरुष 17 मिनट। बच्चों के साथ वह 2 घंटे बिताती हैं तो पुरुष 10 मिनट, पति टी.वी. ज्यादा समय देखते हैं। उनसे एक घंटा ज्यादा सोते हैं तथा खाना ज्यादा इत्मिनान से धीरे-धीरे खाते हैं।

कहने का मतलब यह है कि तमाम ज़िम्मेदारियों की वजह से औरतें तनावमुक्त नहीं हो पाती हैं। यही नहीं, मार-पीट, यौन-हिंसा आदि के कारण भी उनका मानसिक स्वास्थ्य सामान्य नहीं रह पाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रपट से यह तथ्य सामने आया है कि प्रसूति, गर्भपात, मृत शिशु जन्मना आदि के कारण भी वे एक मानसिक तनाव से ग्रस्त रहती हैं। जब तक बच्चा एक वर्ष का नहीं हो जाता वे काफी मानसिक तनाव में रहती हैं।

इसके अलावा जो-जो काम औरतों के ज़िम्मे हैं उन्हें हीन काम समझे जाने की वजह से औरतें हीन-भावना से ग्रस्त हो जाती हैं।

आखिर पुरुषों की ज़िम्मेदारी है कहां। उनका काम है पैसा कमा कर लाना और उसे परिवार की देखभाल पर खर्च करना। पर यह भी कहां हो पा रहा है। हमारे अनुमान से कहीं ज्यादा परिवारों की मुखिया महिलाएं हैं। इनमें परित्यक्ता, विधवा तथा भारी संख्या में सधवाएं भी हैं जो खुद कमाकर लाती हैं तो घर चलता है। पुरुषों की कमाई का काफी हिस्सा उनका जेब खर्च बनकर रह जाता है।

दोष व्यवस्था का

इसमें दोष हमारी सामाजिक व्यवस्था का है। लड़कों को बचपन से ही खेल-कूद, मौज-मस्ती की पूरी छूट दी जाती है। लड़कियों के साथ घूमने की उन्हें पूरी छूट है। यौनिक-हिंसा, बलात्कार आदि करके भी वे खुले छुट जाते हैं। शुद्धता, सतीत्व, पतिव्रत्य की ज़िम्मेदारी उन पर नहीं थोपी जाती।

इंद्र धोखे से ऋषि पत्नी के साथ शय्या पर सोते हैं। ऋषि पत्नी को पत्थर बनना पड़ता है। इंद्र एक घोड़े की बलि करके पापमुक्त हो जाते हैं। इंद्र अनेक अप्सराओं के साथ मौज-मस्ती करके भी देवता बने रह सकते हैं। अग्नि परीक्षा सीता को ही देनी पड़ती है, राम या लक्ष्मण को नहीं।

दूसरा पक्ष

लड़कों को बचपन से ही ग़ैर-ज़िम्मेदार बनाकर हम कितनी भूल कर रहे हैं। उनको खुली छूट देने का नतीजा है उनका अशिष्ट व्यवहार। हिंसा, यौन-हिंसा के बढ़ते आंकड़े, बिना मेहनत किए जल्दी से जल्दी किसी भी तरह पैसा कमाना यह सब है समाज में बढ़ते अपराध के कारण।

ज़रा सोचें, हम कैसे, कहां, क्या बदलाव ला सकते हैं। समाज या बाहरी प्रभाव को कितना भी दोष क्यों न दें, इन सबके बीज परिवार में ही रोपे जाते हैं। बदलाव भी वहीं से लाना होगा।

एड्स निरोधक—औरत का सतीत्व?

औरतों को हर समस्या, हर बीमारी, हर बुराई का कारण व उनके निदान के लिए ज़िम्मेदार ठहराने का चरम बिंदु जानलेवा

एड्स की बीमारी के संबंध में प्रचार व प्रसार में देखा जा सकता है। वेश्याओं पर तो दबाव डाला जा रहा है कि बिना कंडोम लिए आने वाले ग्राहकों को स्वीकार न करें। लेकिन यह मानकर चला जा रहा है कि पुरुषों को वहां जाने से व कंडोम ले जाने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।

बात वेश्याओं तक सीमित रहती तो भी ठीक था। लेकिन अब एक स्वयं सेवी संस्था द्वारा बिंदी और सिंदूर घर-घर पहुंचाया जा रहा है और उसके साथ यह संदेश—ललाट की यह बिंदी सतीत्व और पति के प्रति वफादारी का प्रतीक है। यही सबसे बड़ा एड्स प्रतिरोधक भी है।

अब भला कोई यह बताए कि क्या आम भारतीय गृहणियां घरों में एड्स लाती हैं? क्या उनका सती-सावित्री होना पतियों को पर-स्त्री गमन से रोक सकता है?

मणिमाला जी ने ठीक ही कहा है "अगर 'सुहागा' पुरुष को यह बताया जाए कि वे अपने 'सतीत्व' की रक्षा करें और अपनी पत्नी के प्रति वफादारी निभाएं तो न केवल एड्स की समस्या से छुटकारा मिलेगा, वैश्यालयों से भी समाज को छुटकारा मिलेगा।" □